आपातकाल में सृजन फुलवारी

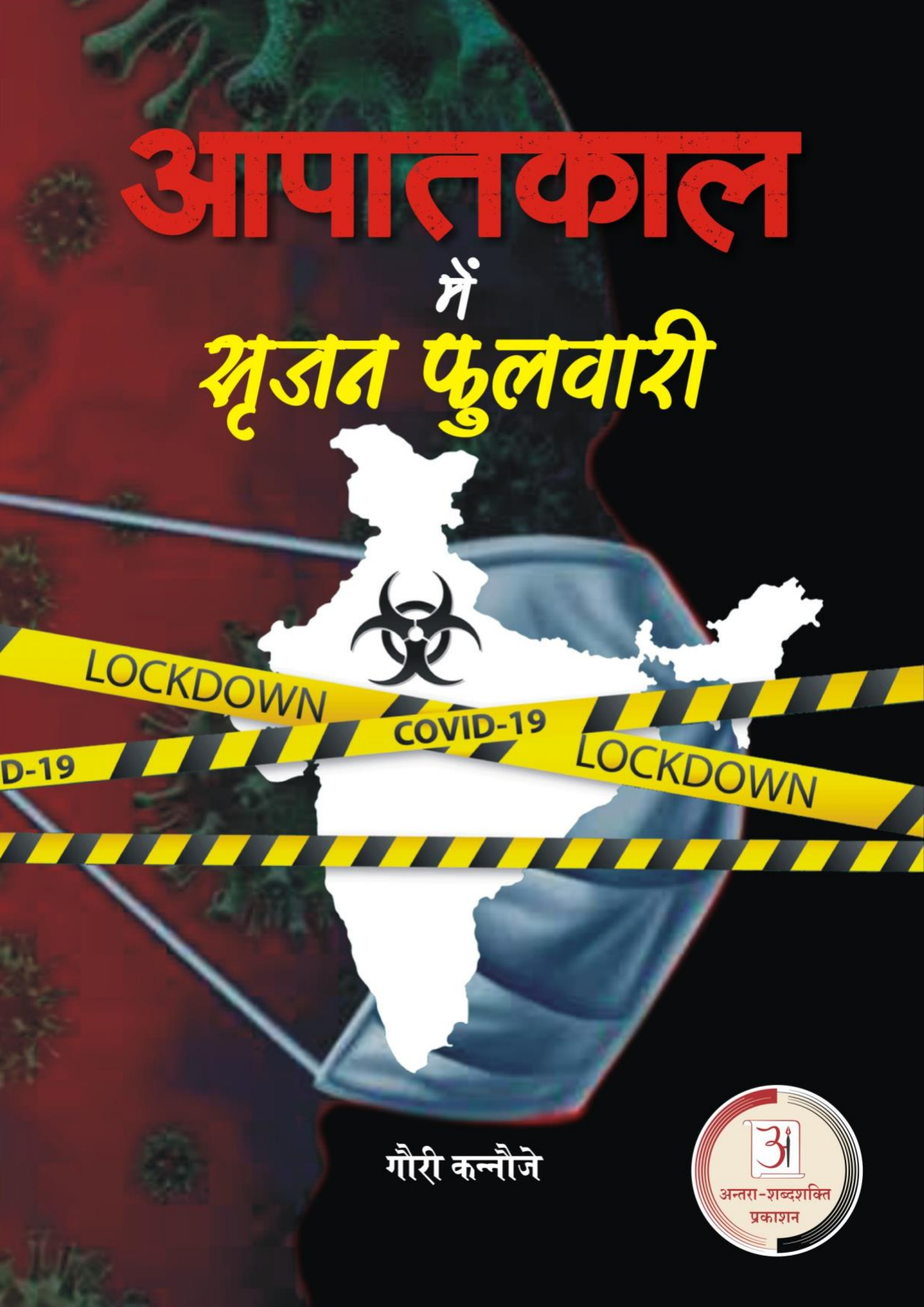

गौरी कन्नौजे

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

गौरी कनौजे

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-178-7

संपादक- डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र- संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी
मुख्य कार्यालय- 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331
दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159
मोबाईल- 9424765259
ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाईट- www.antrashabdshakti
प्रथम संस्करण- 2020, गौरी कनौजे
मूल्य- 50.00 रूपये
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी
THE BOOK WRITTEN BY GAURI KANOJE

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेंगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	याद है तुम्हें	6
2.	काश!	7
3.	जब ऑनलाइन दिखते हो	8
4.	डर लगता है मुझे	9
5.	नारी तू ही नारायणी	10
6.	अंतहीन संवाद	11
7.	मेरे बच्चे	12
8.	चाँद गवाह था	13
9.	वो एक रात!	14
10.	जो यूँ न छोड़ जाते	15
11.	खुश हूँ मैं!	16
12.	जा रहे है वो	17
13.	संडे छुट्टी नहीं होती।	18
14.	मुलाकात जिंदगी से	20

याद है तुम्हें

याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था
मैं कहती थी, जाऊँ अब, तब तुमने हँसकर,
हाथ थामकर बिठाया था।
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

न जाने कितनी देर बातें की हमने
गीत का सृजन करते करते खो जाते थे ख़यालो में
तब, धीरे से कुछ कहकर, जोरों से मुझे डराया था।
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

उल्टे-सीधे सुरों में गाकर जब की थी सुर साधना,
और जब बोर हो गई थी मैं
तब, एक गीत मेरे लिए गाकर, नींद को मेरी भगाया था।
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

जब कभी कुछ अच्छा निकल आया कलम से मेरी
तब, बहुत सी तारीफ़ के साथ
हाथ मेरा चूमकर हौसला मेरा बढ़ाया था।
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

स्तब्ध रह गई जब मैं इस हरकत से
तब, तुमने कान पकड़कर, माफी मांग कर
बड़प्पन अपना दिखाया था
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

ये भी अंदाज़ निराला है तुम्हारा,
खुद ही दिल पर दस्तक दी थी
और इसे कुछ और नाम देकर
मुझे दिल का दरवाजा न खोलने के लिए चेताया था।
याद है तुम्हें, किस कदर मुझे हँसाया था।

काश!

काश! मैं बारिश बन जाऊँ, बरसूं उन पर जमकर,
भिगोकर रख दूँ उन्हें और पूछुं, क्यों याद नही करते मुझे आजकल?

काश! मैं हवा बन जाऊँ और छू आऊँ उन्हें
और ये एहसास दिलाऊँ की वो भी कुछ ऐसे ही हमें छूकर चले जाते हैं।

काश! मैं आँसू बन जाऊं और बस जाऊँ,
उनकी आँखों में हमेशा के लिए, जैसे वो मेरी आँखों मे रहने लगे हैं।

काश! मैं वो मिट्टी बन जाऊँ जहाँ उनके कदम पड़े,
और उनकी महक को अपने मे समा महकती रहूँ हर पल।

काश! मैं उनके हाथों की लेखनी बन जाऊँ,
और लिख दूँ अपनी कहानी पूर्णविराम तक।

काश! मेरे ये सारे काश सच हो जाये,
और जैसे मैं चाहती हूँ उन्हें जिंदगी की तरह, वो भी मुझे चाहने लगें।

जब ऑनलाइन दिखते हो

दिल धड़क जाता है सच में, जब ऑनलाइन दिखते हो,
उँगलियाँ मचल जाती है कीपैड पर, जल्दी से कुछ भेजने के लिए,
भेज ही देती हूँ कुछ न कुछ, जब ऑनलाइन दिखते हो।

मैसेज भेजने के बाद जानती हूँ मैं,
जवाब कुछ नही आयेगा,
सिर्फ दो नीली लाइन देखने के लिए जागती हूँ,
कई बार रात में, क्या ये जानते हो?
दिल धड़क जाता है सच में, जब ऑनलाइन दिखते हो।

जवाब कभी कोई आ जाये,
तो खुशी से झूम उठती हूँ,
न भी आये तो कोई गम नही, खयालों में हम हैं ही,
ये हम भी और तुम भी जानते हो, फिर भी जाने क्यों,
दिल धड़क जाता है सच में, जब ऑनलाइन दिखते हो।

जाने क्या है तेरे मेरे बीच,
इश्क, मोहब्बत, तो बिल्कुल भी नहीं,
मतलब का रिश्ता भी नहीं, क्योंकि तुम्हारे बिना मैं,
मेरे बिना तुम बखूबी आबाद हो, पर फिर भी जाने क्यों
दिल धड़क जाता है सच में, जब ऑनलाइन दिखते हो।

सच कहूँ, तुम्हारी बातो ने,
जीने का रुख बदल दिया
जिंदगी में नये रंग भरना सीखा दिया,
आज भी सही तरह से न समझ पाती हूँ तुम्हें, क्या तुम वही हो, जो
दिखाते हो। खैर जो भी हो, ये तो सच है
दिल धड़क जाता है सच में, जब ऑनलाइन दिखते हो।

डर लगता है मुझे

डर लगता है मुझे,
रहना न पड़ मुझे अकेले कहीं,
अपनो को छू न पाऊँ,
उन्हें गले न लगा पाऊँ,
हो न जाऊँ, इतनी मजबूर कहीं।

डर लगता है हर उस इंसान से अभी
जो घूम रहे है खुलेआम खाँसते, छींकते कहीं
डर लगता है, उस सोच से मुझे
जो हँसी में उड़ा देते है,
हर चेतावनी को दूर कहीं।

डर लगता है मुझे,
इन बेवकूफों की हरकतों का भुगतान,
समझदारों को न करना पड़ जाए कहीं
डर लगता है मुझे, कुछ जिज्ञासू कल
सड़कों पर न निकल आये कहीं।

हाथ जोड़ कर विनती है आज,
मान लो प्रधानमंत्री की बात
घर मे रहो, सुरक्षित रहो,
और ये जो डर है हम सबके मन में,
इसे दूर खदेड़ दो कहीं।

नारी तू ही नारायणी

नारी तू ही नारायणी,
तू है तो ही पार होगी, संसार की ये वैतरणी।

ईंटो के मकान को घर बनाती है तू,
परिवार को एक माला में पिरोती है तू,
तेरे है कई रूप, कभी बेटी, कभी बहन है तू,
कभी प्रेमिका कभी पत्नी है तू,
पर तेरा सबसे महान रूप है जननी,
नारी तू ही नारायणी।
बेटी बनकर पिता के आँगन को महकाए तू,
बहन बनकर स्नेह की नदिया बहाये तू,
पत्नी बनकर सारे कर्तव्य निभाये तू,
राधा या मीरा बन प्रेमपथ पर न डगमगाए तू,
नन्ही जान को दुनिया में लाने कितने दर्द सहे तू,
महिमा तेरी कितनी भी लिखे कलम नही है थकनी,
नारी तू ही नारायणी।
आठ भुजायें तेरी दिखाती नही कभी तू,
कभी खाना बनाये, कभी लोरी सुना बाहों में झुलाए तू,
कभी गाड़ी तो कभी कंप्यूटर चलाए तू,
कभी पढ़ाये तो कभी लिखे-लिखाए तू,
घर के कामों को, सारी रवायतों को निपटाये तू,
ऐसा कोई काम नही जो न कर सके तू,
फिर भी जाने क्यों सब कहते है अबला है तू,
तुझे भी तेरी नई पहचान है बनानी और दिखानी,
नारी तू ही नारायणी,
तू है तो पार होगी संसार की ये वैतरणी।

अंतहीन संवाद

फोन की घंटी बजी

उसने फोन उठाया
कहा, हाँ कहो
समय है तुम्हारे पास,
उसने कहा हाँ!
खैरियत से हो तुम
उसने कहा हाँ!
एक बतानी है तुम्हें, बताऊँ
उसने कहा हाँ!
तुम्हारा नाम लिख दिया है मैंने कहीं, चलेगा न?
उसने कहा हाँ!
मैंने कहा धन्यवाद, ख़याल रखो अपना,
उसने कहा हाँ!

(फोन कट गया)

मैंने पूछा संदेश पढ़ते हो मेरे
उसने कहा हाँ!
खुश हो मेरी प्रगति से
उसने कहा हाँ!
याद आती है मेरी
उसने कहा हाँ!
सारी वो बाते सच थी न जो कही थी मुझसे
उसने कहा हाँ!
राह दिखाओगे न हमेशा मुझे
उसने कहा हाँ!

और ये संवाद चलता ही रहा,.....
जाने कब तक!

मेरे बच्चे

वो जो बन गए है जान मेरी,
वो जिन्होंने की है पूरी मुरादें मेरी,
वो जिनसे है मेरा अपनापन,
देखती हूँ जिनमे अपना बचपन,

जिनकी एक मुस्कान पर हूँ फिदा,
लुभाती है जिनकी हर एक अदा,
एक है जो बचपन लाँघ कर हो रहा है बड़ा,
दूसरी जो हरकतों से अपनी हँसाती है बड़ा,

एक मेरा बेटा जो पहचान लेता है शिकन मेरे माथे की,
बाँट लेता है, कामकाज, परेशानियाँ मेरे हिस्से की,
एक मेरी बेटी जो खेलती रहती है मेरे आसपास,
और मेरा बचपन लौटा जाती है,
जिन्हें देखकर भूल जाती हूँ थकान अपनी,

जो महसूस कराते है सुकून जिंदगी में
देकर मुस्कान अपनी,
वैसे तो रिवाज़ नही है कहने का
पर ये रिवाज़ मैं बनाऊँगी,
मेरे बच्चों को मेरा होने के लिए धन्यवाद मैं दूंगी।
वो जो बन गए है जान मेरी,
वो जिन्होंने की है पूरी मुरादें।

चाँद गवाह था

चाँद गवाह था, तुम्हारे इज़हार का,
सुन जिसे हम हैरान हुए!

चाँद गवाह था, तुम्हारे प्यार का
जिससे न कभी हम बेज़ार हुए!

चाँद गवाह था, तुम्हारी हरकतों का
जिससे हम कभी परेशान हुए!

चाँद गवाह था, तुम्हारी तारीफों का
जिससे हम आसमां पर काबिज़ हुए!

चाँद गवाह था उन रातों का जो बिताई
एक दूजे का हाथ थामे, आँखों मे देखते हुए!

चाँद गवाह था उन आंसुओं का
जो याद कर रहा था तुम्हें बहते हुए!

चाँद गवाह था हर उस वादे का
जो तुमने मुझसे किये, मुस्कराते हुए!

चाँद गवाह था उस वक़्त भी
गवाह है आज भी, जब तुम नही हो मेरे लिए!

वो एक रात!

वो एक रात जब हाथ चूमा था मेरा,
मुझे गले लगा कर, चूमी थी पेशानी!

पलकों को चूम कर कहा था,
करने दो दीदार, मुझे खूबसूरती का तुम्हारी,
कभी लगती है मुझे खूबसूरत एक कहानी,
वो एक रात जब हाथ चूमा था मेरा,
मुझे गले लगा कर चूमी थी पेशानी!

वो एहसास जुदा नहीं कभी मुझसे,
महसूस करती हूँ, उन साँसों को अब भी,
दिल जो धड़का था, एक पल में कई बार,
याद आती है हर वो बात, और वो जज्बात
हर पल साथ रहते हो तुम, जैसे आंखों में पानी
वो एक रात जब हाथ चूमा था मेरा,
मुझे गले लगा कर चुमी थी पेशानी!

क्यों नही बताते मुझे, कुछ ऐसा ही है,
तुम्हारे भी साथ, क्या डरते हो
या सच में नही है ऐसी कोई बात।
फिर क्यों आ जाती है
चमक देखते ही मुझे आंखों में तुम्हारी,
क्या सच में दिल्लगी करते हो,
पर आँखे तो करती है कुछ और ही बयान तुम्हारी,
क्या कुबूल न कर पाओगे कभी ये अपनी ज़ुबानी,
वो एक रात जब हाथ चूमा था मेरा,
मुझे गले लगा कर चुमी थी मेरी पेशानी।

जो यूँ न छोड़ जाते

न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते,
जो मुझे उस मोड़ पर यूँ न छोड़ जाते,
कम-से-कम वज़ह तो बताई होती,
या अपनी बेवफ़ाई ही कुबूल कर जाते,

न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते,
जिस मोड़ पर मुहँ मोड़ गए तुम,
हम अब भी खड़े है वहीं,
हमें नई राह चल देने का हुक्म तो दे जाते।

न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते,
तुम तो रंग गए हमें अपने ही रंग में
अब हर मौसम में तुम् ही याद आते
याद में तुम्हारी साथ बारिश के है रोते।

न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते,
बातें याद कर तुम्हारी, खुद ही आँसू पोंछ लेते,
तुम्हारी बेरुख़ी याद कर जब सर्दियों में थर्राते,
बाहों की गर्माहट याद कर खुद ही संवर जाते।

न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते,
गर्मियों में सूरज की चुभन से तड़पते,
तुम्हारी बातों की ठंडक खुद ही महसूस कर जाते,
काश! एक मौसम बसंत का भी तुम दे जाते।
न तुम मुझे यूँ बेइंतहा याद आते।

खुश हूँ मैं!

हाँ! खुश हूँ मैं, खुश रहती हूँ हमेशा,
अपने आप में, अपने आप से,
ढूंढती रहती हूँ सदा खुशियां खुद में,
छीन लेती हूँ खुशियां, अपने आप से,
हाँ! खुश हूं मैं, अपने आप से!

रखती हूँ खुद को व्यस्त,
नहीं सोचती कोई क्या सोचे,
मेरी जानिब से,
हाँ! खुश हूँ मैं अपने आप से!

नहीं दिया किसी ने मेरी नेकियों का सिला
तो भी नहीं करती गिला,
जो भी जैसा भी मिला
रहती हूँ खुश उसी से
हाँ! खुश हूँ मैं अपने आप से!

अपनी ख्वाहिशें जिंदा रखती हूँ ,
हर पल में उम्मीद ढूंढती हूँ,
हो जाये कोई ख्वाहिश पूरी,
तो उस पल को जी लेती हूँ,
रखे मुझे वो हमेशा ऐसा ही,
यही दुआ है उस रब से,
हाँ! खुश हूँ मैं अपने आप से!

जा रहे है वो

जा रहे है वो जो कहलाते है पिता!

जिसने हमें चलना सिखाया,
जो करते थे सारी इच्छाएँ पूरी,
बिठा साइकिल पर घुमाते थे मेलों में,
मन का कोई कोना नही है,
उन एहसासों से रीता,
जा रहे है वो जो कहलाते है पिता!

बेशक हम कौन सी क्लास में है पढ़ते,
नहीं होता था उन्हें पता,
पर पास होने पर वही मिठाइयां लाते,
पीठ थपथपाते,
जो हमें हँसता देखने के लिए ही जीता,
जा रहे है वो जो कहलाते है पिता!

देर शाम तक खेलने पर थप्पड़ भी खाए कई बार,
आज भी याद है उनके हाथों की वो मार,
तब न समझ पाए थे
कि ये है उनकी हमारे लिए चिंता,
जा रहे है वो जो कहलाते है पिता!

संडे छुट्टी नहीं होती

कहते हैं संडे छुट्टी होती है,
पर मेरा मन तो कुछ और ही कहता है,
लगा रखे हैं अपने पीछे काम कई,
काहे की छुट्टी, काहे का आराम भई,
करनी है साप्ताहिक सफाई,
बनानी होगी डिश नई,
खाना खा कर बोर हो गए रोज वही,

छुट्टी तो नहीं मिलेगी, सोचना भी नहीं!

पतिदेव को एक दिन दया आ गई,
कहा आज खाना बाहर खाते है,
जगह खुली है एक नई
पर ना कर दिया मैंने,
बजट न जाए गड़बड़ा कहीं,
आस अधूरी मेरे मन ही में रही

छुट्टी तो नहीं मिलेगी, सोचना भी नहीं!

खुद को देना है थोड़ा समय,
सोच लो सोचने में क्या जाता है,

होता आ रहा है जो हमेशा से,
होगा तो वही,
ये सोचने का वक़्त है किसके पास
क्या गलत है क्या सही,

छुट्टी तो नहीं मिलेगी, सोचना भी नहीं!

कितना करती हूँ मैं काम
इसका तो कोई हिसाब ही नही
भुगतान यदि करना पड़े तो लग जाएंगे नोट कई,
नोटों का क्या कहूँ, दो पल प्यार के,
दो शब्द धन्यवाद के, दो बोल तारीफ के,
कोई कह दे मैं हो जाऊँ धन्य वहीं,
ये सब तो सपना है, हकीकत है ये कि,

छूट्टी तो नहीं मिलेगी, सोचना भी नहीं

मुलाकात जिंदगी से

कल शाम जिंदगी से मुलाकात हो गई,
वो मुस्कराई, मैं भी मुस्कराई!
उसकी मुस्कान में था सवाल,
मेरी मुस्कान में भी सवाल!
क्या पूछेगी, क्या कहेगी ये,
सालों पहले किया वादा याद आ गया,
जो किया था मैंने जिंदगी से
पर कभी निभा न पाई!

कल शाम जिंदगी से मुलाकात हो गई,
उसने पूछा कैसी हो? खुश तो हो?
हाँ, बिल्कुल मैं भी अपनी धुन में कह गई
फिर देखा जिंदगी को,
मुस्कुरा रही थी वो देख मुझे,
शायद मैं झूठ कहते हुए पकड़ी गई!

कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई,
जिंदगी ने कहा कच्ची ही रही अब भी तुम,
झूठ बोलना तो सीख लेती,
अब तुम छोटी नही रह गई!

कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई,
याद है तुम्हें, क्या शर्त थी तुम्हारी खुश रहने की,
क्या कह पाती हो बिना कुछ सोचे कुछ भी?
क्या निकाल पाती हो मन की भड़ास?

क्या दे पाती हो जवाब पलटकर?
क्या कर पाती हो वो सब जो करना चाहती हो?
क्या पा लिया सब जो थी ख्वाहिशें कई!

कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई,
नहीं-नहीं! सखी हो मेरी तुम मुझे यूँ न सताओ,
मेरे सिसकते तन मन को और न जलाओ,
कभी रोका समाज ने, कभी मर्यादाओं ने, कभी संस्कारों ने,
तो कभी मैं ही हिम्मत न जुटा पाई!

कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई,
तो क्यों कहती हो खुद को मेरी सखी,
तुम तो कठपुतली हो
जो नाचती है हमेशा, इशारों पर औरों के,
जो खुद के बारे में कभी सोचती भी नहीं!

कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई,
जब सोचो कभी जीने के लिए,
खुश रहने के लिए, अपने लिए,
तो करना याद मुझे
आ जाऊँगी फिर बनकर सखी!
खुशियां और साँसे लेकर नई
जाते जाते वो मुझसे कह गई!
जाने कब मुमकिन हो ऐसा,
मैं ये सोचती ही रह गई
कल शाम जिंदगी से मुलाक़ात हो गई।

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

कभी नही सोचा था, ऐसा भी वक्त आएगा, जिस खाली वक्त के लिए तरसते थे हम, वो इतना मिल जाएगा। वक्त कुछ ऐसा ही चल रहा है, जहाँ हम छुट्टियों से ऊब रहे हैं, न बाहर जाना, न किसी से मिलना जुलना, न शादी ब्याह, न कोई सांस्कृतिक, सामाजिक आयोजन। मानो जिंदगी थम कर रह गई है, एक खामोशी हर ओर व्याप्त है, लेकिन यह समय बहुत सारी सौगाते भी दे रहा है। कहाँ पता था हमें, बड़े होते बेटे की ख्वाहिशें, छोटी सी बेटी के छोटे छोटे सपने, और भी बहुत कुछ जिनके बारे में बात तो क्या सोचने के लिए भी फुरसत नही मिलती थी। बस भाग रहे थे, और सिर्फ भाग रहे थे समय के साथ। और अचानक जैसे किसी ने स्टऐचु कह दिया, और हम रुक गए, परिवार के लिए, समाज के लिए और सबसे बड़ी बात खुद के लिए। सभी ने अपनी अपनी तरह से इस समय का सदुपयोग किया, हम तो रचनाकार ठहरे, नई नई कल्पनायें दिमाग मे आती गई और कागजो पर उतरती चली गई।

इस आपातकाल में कुछ नया सृजन करना सचमुच एक अनोखा अनुभव रहा है। इस सृजन ने न सिर्फ हमें क्रियाशील बनाये रखा, अपितु सकारात्मक दृष्टिकोण बनाये रखने में सहायता की। अंतरा शब्दशक्ति ने एक बहुत अच्छी और सराहनीय पहल की है, हमें एक मंच प्रदान किया है जहाँ हम खुद को व्यक्त कर सकें। इसके लिए बहु धन्यवाद। हर बुराई का अंत होता है इस वायरस का भी होगा, तब तक धैर्यपूर्वक अपनी ओर से लड़ाई लड़ते रहना होगा, सरकार के दिशानिर्देशों का पालन कर सामाजिक दायित्व निभाना होगा। बहुत जल्द हम फिर मिलेंगे और फिर अपनी भागदौड़ भरी जिंदगी में व्यस्त हो जाएंगे।

खुश रहिये, बातें करिये अपनो से, और नव सृजन करते रहिए और अपना और अपने परिवार का धयान रखिये। धन्यवाद!

रचनाकार

गौरी कन्नौजे

फ्लैट नं. १०२, ए विंग, अथावा नगरी
पिपलाफाटा, हुडकेश्वर रोड़
नागपुर (महाराष्ट्र)

Email- kanoje.gauri@gmail.com
Mobile - 9923211183

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला – बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क – 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-178-7

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/